

HINDI FILE



DREAM
FOR NATION



DARE
TO SERVE



DELIVER
WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : **SEPTEMBER 18, 2026**



Comprehensive
Coverage



Exam-Focused
Analysis



Concept Clarity
& Insights



Practice MCQs
with Explanation



Daily Updates,
Better Results



CONTACT INFO:

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



EMAIL ID:

info@sixsigmaiias.com



WEB PAGE:

www.sixsigmaiias.com



ADDRESS:

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्रश्न 1. रोमन साम्राज्य और भारतीय उपमहाद्वीप के समाजों के साथ इसके अंतर्संबंधों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारतीय विलासिता की वस्तुओं के लिए रोमन साम्राज्य की मांग ने अरब सागर के पार लंबी दूरी के समुद्री व्यापार के विस्तार में योगदान दिया, जिसमें भारत के पश्चिमी तट के बंदरगाह इस विनिमय में महत्वपूर्ण केंद्र बन गए।
2. भारत में रोमन सोने के सिक्कों की खोज अनिवार्य रूप से यह स्थापित करती है कि रोमन साम्राज्य ने उन क्षेत्रों पर प्रत्यक्ष राजनीतिक नियंत्रण का प्रयोग किया जहाँ ऐसे सिक्के पाए गए हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (a)

विस्तृत व्याख्या: कथन 1 सही है। काली मिर्च, मोती, कीमती पत्थर, वस्त्र और अन्य विलासिता की वस्तुओं जैसी वस्तुओं की रोमन मांग भूमध्यसागरीय दुनिया को हिंद महासागर से जोड़ने वाले लंबी दूरी के व्यापार का एक महत्वपूर्ण घटक थी। मानसून पवन प्रणाली से संबंधित ज्ञान के विकास ने लाल सागर क्षेत्र और भारत के पश्चिमी तट के बीच अधिक प्रत्यक्ष समुद्री आवाजाही को सुगम बनाया।

मुज़िरिस जैसे बंदरगाह, जो पारंपरिक रूप से मालाबार तट से जुड़े हुए हैं, भारत-रोमन व्यावसायिक विनिमय के महत्वपूर्ण केंद्र बन गए। रोमन साहित्यिक स्रोत, पुरातात्विक साक्ष्य और सिक्कों की खोज सामूहिक रूप से इन व्यावसायिक संबंधों की पुष्टि करते हैं।

कथन 2 गलत है। रोमन सिक्कों की उपस्थिति उस क्षेत्र पर रोमन राजनीतिक संप्रभुता को स्थापित नहीं करती है जहाँ वे खोजे गए थे। सिक्के व्यापार, श्रद्धांजलि, भुगतान, उपहार या बाद के प्रचलन के माध्यम से जारी करने वाले राज्य की राजनीतिक सीमाओं से काफी आगे जा सकते हैं।

आर्थिक पैठ और राजनीतिक नियंत्रण के बीच यह अंतर एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जाल (भ्रम) है। विदेशी सिक्कों के पुरातात्विक साक्ष्य आर्थिक संपर्कों के अस्तित्व या तीव्रता को स्थापित कर सकते हैं, लेकिन राजनीतिक नियंत्रण के लिए प्रशासनिक संरचनाओं, अभिलेखों, सैन्य उपस्थिति या प्रत्यक्ष क्षेत्रीय प्राधिकरण जैसे अतिरिक्त साक्ष्यों की आवश्यकता होती है।

भारत-रोमन व्यापार का व्यापक महत्व इस तथ्य में निहित है कि हिंद महासागर एक अलग-थलग भौगोलिक स्थान नहीं था। यह भारत को रोमन भूमध्य सागर, अरब प्रायद्वीप और दक्षिण-पूर्व एशिया से जोड़ने वाले एक व्यापक व्यावसायिक नेटवर्क में एकीकृत था।

इस प्रकार, जबकि भारतीय उपमहाद्वीप के कुछ हिस्सों में रोमन व्यावसायिक प्रभाव काफी अधिक था, इसे स्वचालित रूप से रोमन क्षेत्रीय नियंत्रण के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन-सा एक पारिस्थितिकी तंत्र में कीस्टोन प्रजातियों (Keystone species) के पारिस्थितिक महत्व की सबसे अच्छी व्याख्या करता है?

- वे अनिवार्य रूप से सबसे प्रचुर प्रजातियाँ हैं और इसलिए पारिस्थितिकी तंत्र के बायोमास में सबसे बड़ा हिस्सा योगदान देती हैं।
- उनका पारिस्थितिक प्रभाव उनकी आबादी या बायोमास की तुलना में असमान रूप से बड़ा होता है, इसलिए उन्हें हटाने से समुदाय की संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव आ सकते हैं।
- वे केवल उच्चतम ट्रॉफिक (पोषण) स्तर पर कब्जा करती हैं और इसलिए सीधे प्रत्येक निचले ट्रॉफिक स्तर को नियंत्रित करती हैं।
- वे सबसे व्यापक भौगोलिक वितरण वाली प्रजातियाँ हैं और परिणामस्वरूप पारिस्थितिक व्यवधानों के प्रति प्रतिरोधी हैं।

उत्तर: (b)

विस्तृत व्याख्या: कीस्टोन प्रजाति वह है जिसका पारिस्थितिक प्रभाव उसकी संख्यात्मक प्रचुरता या बायोमास की तुलना में असमान रूप से बड़ा होता है।

यह अवधारणा महत्वपूर्ण है क्योंकि पारिस्थितिकी तंत्र की संरचना को केवल जीवों की गिनती करके या बायोमास को मापकर हमेशा नहीं समझा जा सकता है। कोई प्रजाति अपेक्षाकृत दुर्लभ हो सकती है लेकिन शिकार, प्रतिस्पर्धा, आवास संशोधन, बीज फैलाव, परागण या अन्य पारिस्थितिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से मजबूत नियामक प्रभाव डाल सकती है।

इसलिए ऐसी प्रजाति को हटाने से एक ट्रॉफिक कैस्केड (पोषण श्रृंखला में हलचल) या पारिस्थितिक समुदाय का महत्वपूर्ण पुनर्गठन हो सकता है।

विकल्प (a) गलत है क्योंकि कीस्टोन प्रजाति का प्रचुर होना आवश्यक नहीं है। वास्तव में, इसकी परिभाषित विशेषता ठीक यही है कि इसका पारिस्थितिक प्रभाव इसकी प्रचुरता से असमान (अत्यधिक) होता है।

विकल्प (c) गलत है क्योंकि कीस्टोन प्रजातियाँ आवश्यक रूप से शीर्ष शिकारी (apex predators) नहीं होती हैं। कीस्टोन प्रभाव विभिन्न ट्रॉफिक स्थितियों पर हो सकते हैं।

विकल्प (d) गलत है क्योंकि भौगोलिक सीमा कीस्टोन प्रजाति की पहचान करने का मानदंड नहीं है।

एक उपयोगी वैचारिक अंतर निम्नलिखित के बीच है:

- कीस्टोन प्रजाति (Keystone species)** → असमान रूप से बड़ा पारिस्थितिक प्रभाव।
- प्रभावी प्रजाति (Dominant species)** → अक्सर संख्यात्मक या बायोमास के रूप में हावी।
- सूचक प्रजाति (Indicator species)** → विशेष पर्यावरणीय परिस्थितियों के आकलन के लिए उपयोगी।
- फाउंडेशन प्रजाति (Foundation species)** → आवास और पारिस्थितिकी तंत्र की संरचना को महत्वपूर्ण रूप से संशोधित या निर्मित करती हैं।

UPSC स्तर का जाल पारिस्थितिक महत्व को प्रचुरता के साथ भ्रमित करना है। पारिस्थितिकी तंत्र का कामकाज अत्यधिक अंतःक्रियाओं पर निर्भर करता है, न कि केवल जनसंख्या के आकार पर।

प्रश्न 3. आर्थिक वृद्धि (Economic growth) और आर्थिक विकास (Economic development) के बीच अंतर के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कोई देश मानव विकास के परिणामों में आनुपातिक सुधार के बिना भी सकारात्मक वास्तविक जीडीपी वृद्धि का अनुभव कर सकता है।
2. आर्थिक विकास का अनिवार्य रूप से अर्थ यह है कि बढ़ती राष्ट्रीय आय के लाभ जनसंख्या के सभी वर्गों के बीच समान रूप से वितरित हों।
3. स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी क्षमताओं तक पहुंच में सुधार से विकास हो सकता है, भले ही मापे गए जीडीपी में उनका तत्काल योगदान सीमित हो।

ऊपर दिए गए कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

विस्तृत व्याख्या: कथन 1 और 3 सही हैं, जबकि कथन 2 गलत है।

कथन 1 सही है। आर्थिक वृद्धि सामान्यतः वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि को संदर्भित करती है, जिसे आमतौर पर वास्तविक जीडीपी या संबंधित योगों में परिवर्तनों के माध्यम से मापा जाता है। हालांकि, केवल जीडीपी वृद्धि आय के वितरण, शिक्षा की गुणवत्ता, स्वास्थ्य परिणामों, पर्यावरणीय स्थिरता या आवश्यक सेवाओं तक पहुंच को नहीं दर्शाती है। इसलिए, एक अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ सकती है जबकि जनसंख्या के महत्वपूर्ण वर्ग खराब सामाजिक परिणामों का अनुभव करना जारी रखते हैं।

कथन 2 गलत है। आर्थिक विकास के लिए आय के समान वितरण की आवश्यकता नहीं होती है। एक अधिक उपयुक्त वैचारिक समझ में लोगों की क्षमताओं, अवसरों, जीवन स्तर और आवश्यक सेवाओं तक पहुंच में सुधार शामिल है। समानता और विकास संबंधित नीतिगत चिंताएं हैं, लेकिन वे समान अवधारणाएं नहीं हैं। एक अर्थव्यवस्था पूर्ण आय समानता प्राप्त किए बिना औसत जीवन स्तर में सुधार का अनुभव कर सकती है।

कथन 3 सही है। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा मानव विकास के मूलभूत घटक हैं। इन क्षेत्रों में सुधार मानव क्षमताओं, उत्पादकता और जीवन की गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं, भले ही उनके तत्काल प्रभाव पारंपरिक जीडीपी मापों में पूरी तरह से दिखाई न दें। उदाहरण के लिए, बेहतर निवारक स्वास्थ्य सेवा भविष्य के आर्थिक नुकसान को कम कर सकती है और साथ ही जीवन की गुणवत्ता में सुधार कर सकती है। इसी तरह, बेहतर शिक्षा दीर्घकालिक उत्पादकता लाभ उत्पन्न कर सकती है जो हो सकता है कि राष्ट्रीय-आय के आंकड़ों में तुरंत दिखाई न दे।

इसलिए गहरा वैचारिक अंतर यह है:

- **आर्थिक वृद्धि** → मुख्य रूप से आर्थिक गतिविधि का मात्रात्मक विस्तार।
- **आर्थिक विकास** → मानव कल्याण, क्षमताओं और संरचनात्मक स्थितियों में व्यापक सुधार।

यही कारण है कि साक्षरता, जीवन प्रत्याशा, पोषण संबंधी परिणाम, लैंगिक समानता और बुनियादी सेवाओं तक पहुंच जैसे संकेतक आय-आधारित संकेतकों के पूरक बनते हैं।

प्रश्न में कथन2 में जानबूझकर "अनिवार्य रूप से" शब्द का प्रयोग किया गया है। UPSC अक्सर ऐसे निरपेक्ष कथनों का परीक्षण करता है क्योंकि विकास कहलाने के लिए विकास का अर्थ समान आय वितरण होना ही आवश्यक नहीं है।

प्रश्न4. स्वतंत्रता के बाद के भारत में उभरी क्षेत्रीय आकांक्षाओं के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारतीय संघ के भीतर किसी राज्य द्वारा अधिक स्वायत्तता की मांग, अपने आप में, पृथकता (Secession) की मांग के बराबर नहीं है।
2. राज्यों के भाषाई पुनर्गठन ने यह प्रदर्शित किया कि क्षेत्रीय पहचान के समायोजन को संवैधानिक ढांचे के भीतर शामिल किया जा सकता है।
3. नए राज्यों का निर्माण ऐतिहासिक रूप से केवल तभी हुआ है जब संबंधित आंदोलन ने भारतीय संघ को स्पष्ट रूप से खारिज कर दिया हो।
4. क्षेत्रीय आकांक्षाओं के प्रति भारत के दृष्टिकोण में लोकतांत्रिक बातचीत, संवैधानिक पुनर्गठन और कुछ परिस्थितियों में राजनीतिक या प्रशासनिक हस्तक्षेप का संयोजन शामिल रहा है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कितने सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

उत्तर: (c)

विस्तृत व्याख्या: कथन1, 2 और 4 सही हैं, जबकि कथन3 गलत है।

कथन1 सही है। संवैधानिक ढांचे के भीतर अधिक स्वायत्तता की मांग वैचारिक रूप से संप्रभुता या पृथकता (अलग होने) की मांग से भिन्न है। क्षेत्रीय आंदोलन भारत की क्षेत्रीय अखंडता को स्वीकार करना जारी रखते हुए अधिक राजकोषीय, प्रशासनिक, सांस्कृतिक या राजनीतिक स्वायत्तता की मांग कर सकते हैं। यह अंतर भारत के संघीय अनुभव को समझने के लिए केंद्रीय है।

कथन2 सही है। राज्यों का भाषाई पुनर्गठन संवैधानिक और लोकतांत्रिक तंत्रों के माध्यम से क्षेत्रीय पहचानों को समायोजित करने का एक महत्वपूर्ण उदाहरण था। राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 ने भारत के आंतरिक प्रशासनिक मानचित्र को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया। शुरुआती यह आशंका कि भाषाई राज्य राष्ट्रीय एकता को कमजोर कर सकते हैं, उस सरलीकृत तरीके से सच साबित नहीं हुई जैसी आशंका जताई गई थी। इसके बजाय, संवैधानिक प्रणाली ने भाषाई पहचानों को समायोजित करने में काफी लचीलापन प्रदर्शित किया।

कथन3 गलत है। नए राज्यों के गठन के लिए संबंधित आंदोलन द्वारा भारतीय संघ को खारिज करने की आवश्यकता नहीं पड़ी है। कई राज्य-निर्माण आंदोलनों ने भारत से स्वतंत्रता के बजाय भारत के भीतर ही एक अलग राज्य की मांग की है। यह उप-राष्ट्रवाद (Sub-nationalism) और पृथकतावाद (Secessionism) के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है।

कथन4 सही है। क्षेत्रीय आकांक्षाओं के भारत के प्रबंधन में कई तरीकों का इस्तेमाल किया गया है। इनमें शामिल हैं:

- राज्यों का निर्माण या पुनर्गठन;
- संवैधानिक व्यवस्थाएं;

- राजनीतिक बातचीत;
- चुनावी समायोजन;
- संस्थागत तंत्र;
- विकेंद्रीकरण; और
- जहाँ आवश्यक हो, प्रशासनिक और सुरक्षा उपाय।

इस प्रकार, क्षेत्रीयता को "समायोजन" बनाम "बल प्रयोग" के एक साधारण द्विध्रुवी रूप में नहीं समझा जा सकता है।

'स्वतंत्रता के बाद से भारत में राजनीति' का व्यापक सबक यह है कि भारत की एकता अक्सर संवैधानिक प्राधिकरण को छोड़े बिना विविधता को समायोजित करने की उसकी राजनीतिक संस्थाओं की क्षमता पर निर्भर रही है।

यह प्रश्न जानबूझकर क्षेत्रीय स्वायत्तता, क्षेत्रीयता और पृथक्तावाद के बीच अंतर के आसपास तैयार किया गया है, जिन्हें अक्सर गलत तरीके से एक ही मान लिया जाता है।

प्रश्न 5. महासागरों की धाराओं के भौगोलिक महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

अभिकथन (A): महाद्वीपों के पश्चिमी तटीय किनारों की जलवायु परिस्थितियाँ केवल उनके अक्षांश द्वारा निर्धारित नहीं होती हैं।

कारण I (R-I): कुछ पश्चिमी महाद्वीपीय किनारों के साथ ठंडी महासागरीय धाराएं आसन्न तटीय क्षेत्रों में वाष्पीकरण और वायुमंडलीय नमी की उपलब्धता को कम कर सकती हैं।

कारण II (R-II): वायुमंडल का सामान्य परिसंचरण और प्रचलित पवन प्रणालियाँ महासागरीय धाराओं की दिशा और वितरण को प्रभावित करती हैं।

निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?

- अभिकथन और कारण I दोनों सही हैं, और कारण II अभिकथन की सही व्याख्या है; कारण II सही नहीं है।
- अभिकथन और कारण II दोनों सही हैं, और कारण I अभिकथन की सही व्याख्या है; कारण I सही नहीं है।
- कारण I और कारण II दोनों सही हैं, और दोनों अभिकथन के लिए व्याख्या प्रदान करते हैं।
- अभिकथन सही है, लेकिन कारण I और कारण II दोनों गलत हैं।

उत्तर: (c)

विस्तृत व्याख्या: अभिकथन सही है। अक्षांश जलवायु पर एक महत्वपूर्ण नियंत्रण है, लेकिन यह स्वतंत्र रूप से जलवायु परिस्थितियों का निर्धारण नहीं करता है। महासागरीय धाराएं, वायुमंडलीय परिसंचरण, प्रचलित हवाएं, उच्चावच (राहत) और महाद्वीपीयता तटीय क्षेत्रों के जलवायु चरित्र को महत्वपूर्ण रूप से संशोधित कर सकती हैं।

कारण I सही है। ठंडी महासागरीय धाराएं आसन्न महाद्वीपीय किनारों के साथ समुद्र की सतह के तापमान को कम कर सकती हैं। ठंडा पानी आमतौर पर वाष्पीकरण को कम करता है और इसलिए ऊपर की वायुमंडल में नमी की आपूर्ति को सीमित करता है। यह तंत्र उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र में कुछ पश्चिमी महाद्वीपीय किनारों के साथ देखी जाने वाली अत्यधिक शुष्कता में योगदान देता है। पेरू (हम्बोल्ट) धारा, उदाहरण के लिए, अटाकामा क्षेत्र सहित दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तट के साथ जलवायु परिस्थितियों से जुड़ी है। हालांकि, ठंडी धाराओं को तटीय रेगिस्तानों का एकमात्र कारण

नहीं माना जाना चाहिए। उपोष्णकटिबंधीय उच्च दबाव वाली पेटी से जुड़ा वायुमंडलीय अवतलन (Atmospheric subsidence), तट से दूर चलने वाली हवा के पैटर्न और स्थलाकृति भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

कारण II भी सही है। महासागरीय धाराएं कई तंत्रों से प्रभावित होती हैं, जिनमें शामिल हैं:

- प्रचलित हवाएं;
- पृथ्वी का घूर्णन और कोरियोलिस प्रभाव;
- तापमान और लवणता में अंतर;
- घनत्व प्रवणता (Density gradients);
- महाद्वीपों और महासागरीय बेसिनों का विन्यास।

परिणामस्वरूप, वायुमंडलीय परिसंचरण और महासागरीय परिसंचरण वैश्विक जलवायु प्रणाली के निकटता से जुड़े हुए घटक हैं।

इसलिए दोनों कारण यह समझाने में योगदान करते हैं कि केवल अक्षांश ही पश्चिमी तटीय किनारों की जलवायु की पर्याप्त रूप से व्याख्या क्यों नहीं कर सकता है।

महत्वपूर्ण वैचारिक जाल यह है कि कारण II केवल महासागरीय धाराओं का वर्णन नहीं करता है; यह वायुमंडलीय-महासागरीय अंतःक्रिया को स्थापित करता है जिसके माध्यम से भौगोलिक जलवायु पैटर्न उत्पन्न होते हैं।

इसलिए, अभिकथन को कारण I और कारण II दोनों द्वारा समर्थन प्राप्त है, जिससे (c) उपयुक्त उत्तर बन जाता है।



दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्रश्न 1. लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास परिषदों (LAHDCs) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. लद्दाख के सभी सात जिलों में LAHDC ढांचे का हालिया विस्तार मौजूदा वैधानिक विकेंद्रीकरण तंत्र के विस्तार का प्रतिनिधित्व करता है, न कि छठी अनुसूची के तहत एक संवैधानिक निकाय के निर्माण का।
2. LAHDC अपना अधिकार सीधे भारत के संविधान से उसी प्रकार प्राप्त करते हैं जैसे छठी अनुसूची के तहत गठित स्वायत्त जिला परिषदें प्राप्त करती हैं।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2

- (c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (a)

विस्तृत व्याख्या: कथन1 सही है। LAHDC वैधानिक, निर्वाचित जिला-स्तरीय संस्थान हैं जो लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास परिषद अधिनियम, 1997 के तहत स्थापित किए गए हैं। हाल तक, यह ढांचा लेह और कारगिल में संचालित होता था। सितंबर 2026 में, लद्दाख प्रशासन ने सभी सात जिलों में LAHDC की स्थापना को मंजूरी दी, जिससे इस प्रणाली का विस्तार पांच नए निर्मित जिलों—शाम, नुब्रा, चांगथांग, ज़ांस्कर और द्रास में हो गया। यह एक महत्वपूर्ण अंतर है: LAHDC का विस्तार विकेंद्रीकृत शासन को मजबूत करता है, लेकिन यह अपने आप में उन्हें संवैधानिक संस्थानों में परिवर्तित नहीं करता है।

कथन2 गलत है। LAHDC को संविधान की छठी अनुसूची के तहत स्वायत्त जिला परिषदों के बराबर नहीं माना जाना चाहिए। छठी अनुसूची असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम में निर्दिष्ट जनजातीय क्षेत्रों के लिए स्वायत्त प्रशासन का एक संवैधानिक रूप से निहित ढांचा प्रदान करती है। इसके विपरीत, LAHDC लद्दाख के लिए विशिष्ट एक वैधानिक ढांचे के तहत काम करते हैं। लद्दाख प्रशासन की हालिया अधिसूचना स्पष्ट रूप से लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास परिषद अधिनियम, 1997 के तहत जारी की गई थी। इसलिए वैचारिक जाल (भ्रम) वैधानिक स्वायत्तता और संवैधानिक स्वायत्तता के बीच है। दोनों में विकेंद्रीकरण और स्थानीय भागीदारी शामिल हो सकती है, लेकिन उनकी कानूनी नींव अलग-अलग है। हालिया विकास महत्वपूर्ण है क्योंकि जो निर्वाचित स्थानीय-सरकार ढांचा पहले लेह और कारगिल में मौजूद था, उसे अब सभी सात जिलों में विस्तारित किया जा रहा है।

प्रश्न2. पैसिफिक आइलैंड्स फोरम (PIF) को सबसे अच्छी तरह इस रूप में समझा जाता है:

- (e) मुख्य रूप से प्रशांत क्षेत्र में बाहरी शक्तियों के खिलाफ सामूहिक रक्षा प्रदान करने के लिए बनाया गया एक सैन्य गठबंधन
(f) एक प्रशांत व्यापार ब्लॉक जो विशेष रूप से संप्रभु द्वीप राज्यों तक सीमित है और इसमें ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड शामिल नहीं हैं
(g) प्रशांत द्वीप क्षेत्रों के प्रशासन के लिए जिम्मेदार एक संयुक्त राष्ट्र विशेष एजेंसी
(h) एक क्षेत्रीय राजनीतिक और आर्थिक संगठन जिसके सदस्य सामूहिक रूप से "ब्लू पैसिफिक" दृष्टिकोण का अनुसरण करते हैं

उत्तर: (d)

विस्तृत व्याख्या: पैसिफिक आइलैंड्स फोरम (PIF) एक क्षेत्रीय राजनीतिक और आर्थिक संगठन है, जिसकी स्थापना 1971 में हुई थी, और वर्तमान में इसमें 18 सदस्य शामिल हैं। इसकी सदस्यता में प्रशांत द्वीप राज्यों और क्षेत्रों के साथ-साथ ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड शामिल हैं। फोरम का क्षेत्रीय दृष्टिकोण "ब्लू पैसिफिक" (Blue Pacific) की अवधारणा से दृढ़ता से जुड़ा हुआ है, जो प्रशांत को केवल छोटे द्वीप राज्यों के संग्रह के रूप में नहीं बल्कि एक जुड़े हुए भू-राजनीतिक, पारिस्थितिक और आर्थिक क्षेत्र के रूप में देखता है। PIF का एजेंडा पारंपरिक व्यापार मामलों से काफी आगे तक फैला हुआ है। इसमें शामिल हैं:

- जलवायु परिवर्तन;
- सतत विकास;
- क्षेत्रीय सुरक्षा;

- आर्थिक लचीलापन;
- महासागर शासन;
- सामाजिक समावेश; और
- प्रशांत क्षेत्रवाद को मजबूत करना।

2022 में अपनाई गई '2050 स्ट्रेटेजी फॉर द ब्लू पैसिफिक कॉन्टिनेंट', इस सामूहिक क्षेत्रीय दृष्टिकोण की एक प्रमुख अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करती है।

विकल्प (a) गलत है क्योंकि PIF एक पारंपरिक सैन्य गठबंधन नहीं है। विकल्प (b) गलत है क्योंकि इसकी सदस्यता संप्रभु छोटे द्वीप राज्यों से अधिक व्यापक है; फोरम में ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और फ्रेंच पोलिनेशिया तथा न्यू कैलेडोनिया जैसे क्षेत्र शामिल हैं। विकल्प (c) गलत है क्योंकि यह संयुक्त राष्ट्र की विशेष एजेंसी नहीं है।

UPSC-स्तर का वैचारिक जाल PIF की व्याख्या पूरी तरह से द्वीप राज्यों के नजरिए से करना है। इसका महत्व तेजी से सामूहिक क्षेत्रीय एजेंसी—विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन, महासागरों, विकास और भू-राजनीतिक मामलों पर—निहित है।

प्रश्न 3. आधार (Aadhaar) से जुड़ी 'ऑफलाइन सत्यापन चाहने वाली संस्था' (Offline Verification Seeking Entity - OVSE) संरचना के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. एक OVSE सेंट्रल आइडेंटिटीज डेटा रिपोजिटरी (CIDR) से जुड़े बिना आधार-आधारित ऑफलाइन सत्यापन कर सकता है।
2. सुरक्षित क्यूआर कोड (Secure QR Code) और आधार पेपरलेस ऑफलाइन ई-केवाईसी एक्सएमएल (Aadhaar Paperless Offline e-KYC XML) मान्यता प्राप्त तरीके हैं जिनके माध्यम से ऑफलाइन सत्यापन किया जा सकता है।
3. एक OVSE को अपने ऑफलाइन सत्यापन लॉग में निवासी के आधार नंबर या वर्चुअल आईडी को बनाए रखने की अनुमति है, जब भी निवासी ने ऐसे प्रतिधारण (रखरखाव) के लिए सहमति दी हो।

ऊपर दिए गए कथनों में से कौन-से सही हैं?

- (i) केवल 1 और 2
- (j) केवल 2 और 3
- (k) सभी तीन
- (l) केवल 1 और 3

उत्तर: (a)

विस्तृत व्याख्या: कथन 1 और 2 सही हैं, जबकि कथन 3 गलत है।

कथन 1 सही है। ऑफलाइन आधार सत्यापन किसी संगठन को सेंट्रल आइडेंटिटीज डेटा रिपोजिटरी (CIDR) से जुड़े बिना, स्थानीय रूप से पहचान-संबंधित जानकारी सत्यापित करने में सक्षम बनाता है। इस तरह के कानूनी ऑफलाइन सत्यापन को करने वाले संगठनों को ऑफलाइन सत्यापन चाहने वाली संस्थाएं (OVSEs) कहा जाता है। यह अंतर महत्वपूर्ण है क्योंकि ऑफलाइन सत्यापन वैचारिक रूप से आधार प्रमाणीकरण से भिन्न है जिसमें केंद्रीय रिपोजिटरी के साथ वास्तविक समय में बातचीत शामिल होती है।

कथन2 सही है। ऑफ़लाइन सत्यापन के दो महत्वपूर्ण रूप हैं:

- सुरक्षित क्यूआर कोड (Secure QR Code), जो आधार दस्तावेजों जैसे आधार पत्र, ई-आधार, आधार पीवीसी कार्ड और एम-आधार पर उपलब्ध है; और
- आधार पेपरलेस ऑफ़लाइन ई-केवाईसी एक्सएमएल (Aadhaar Paperless Offline e-KYC XML), जो UIDAI तंत्र के माध्यम से डाउनलोड किया जाता है। इन रूपों में निहित डेटा UIDAI द्वारा डिजिटल रूप से हस्ताक्षरित होता है, जिससे सत्यापनकर्ता को CIDR तक सीधी पहुंच की आवश्यकता के बिना इसकी प्रामाणिकता की जांच करने की अनुमति मिलती है।

कथन3 गलत है। भले ही कोई OVSE निवासी की सहमति से सत्यापन-संबंधित लॉग बनाए रखता है, लागू ढांचा इस बात पर प्रतिबंध लगाता है कि क्या संग्रहीत किया जा सकता है। नियम विशेष रूप से यह कहते हैं कि ऐसे लॉग बनाए रखने वाला एक OVSE आधार संख्या धारक के आधार नंबर या वर्चुअल आईडी को संग्रहीत नहीं करेगा।

यह प्रश्न ऑफ़लाइन सत्यापन और केंद्रीकृत भंडारण के बीच एक सूक्ष्म अंतर का परीक्षण करता है। इस ढांचे का उद्देश्य केवल आधार सत्यापन को ऑफ़लाइन स्थानांतरित करना नहीं है, जबकि सत्यापनकर्ता के छोर पर अप्रतिबंधित केंद्रीकृत डेटा प्रतिधारण को पुनरुत्पादित करना हो। इस प्रकार, केवल कथन1 और 2 सही हैं।

प्रश्न4. केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (CCPA) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. CCPA मुख्य रूप से एक वर्ग के रूप में उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा करने, उन्हें बढ़ावा देने और लागू करने से संबंधित है।
2. यह उपभोक्ता अधिकारों के उल्लंघन और अनुचित व्यापार प्रथाओं की जांच कर सकता है।
3. यह वस्तुओं को वापस मंगाने (Recall), मूल्य वापस करने, या उपभोक्ता अधिकारों का उल्लंघन करने या अनुचित व्यापार प्रथाओं का गठन करने वाले अभ्यासों को बंद करने के निर्देश जारी कर सकता है।
4. CCPA स्वयं जिला, राज्य और राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोगों के सभी निर्णयों पर अपीलीय न्यायिक प्राधिकरण है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कितने सही हैं?

- (m) केवल एक
- (n) केवल दो
- (o) केवल तीन
- (p) सभी चार

उत्तर: (c)

विस्तृत व्याख्या: कथन1, 2 और 3 सही हैं, जबकि कथन4 गलत है।

कथन1 सही है। उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 ने एक वर्ग के रूप में उपभोक्ताओं के अधिकारों की रक्षा, संवर्धन और प्रवर्तन के लिए CCPA की स्थापना की। यह विशेष रूप से अनुचित व्यापार प्रथाओं और भ्रामक विज्ञापनों सहित प्रणालीगत उपभोक्ता-संरक्षण मुद्दों से संबंधित है।

कथन2 सही है। CCPA के पास उपभोक्ता अधिकारों के उल्लंघन और अनुचित व्यापार प्रथाओं से संबंधित जांच शक्तियां हैं। यह अपने वैधानिक जनादेश के अंतर्गत आने वाले मामलों में पूछताछ और जांच कर सकता है।

कथन3 सही है। CCPA की महत्वपूर्ण शक्तियों में से एक निम्नलिखित के संबंध में निर्देश जारी करना है:

- सामान वापस मंगाना (Recall of goods);
- मूल्य की वापसी (Refund of price);
- प्रथाओं/अभ्यासों को बंद करना; और
- झूठे या भ्रामक विज्ञापनों का संशोधन या विलोपन। यह भ्रामक विज्ञापनों से संबंधित निर्दिष्ट परिस्थितियों में जुर्माना भी लगा सकता है।

कथन4 गलत है। CCPA को उपभोक्ता विवाद निवारण आयोगों के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, जो जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर अर्ध-न्यायिक त्रि-स्तरीय उपभोक्ता विवाद-निवारण तंत्र का गठन करते हैं। उपभोक्ता मामले विभाग विशेष रूप से CCPA को इस आयोग संरचना से अलग करता है।

वैचारिक अंतर महत्वपूर्ण है:

- **CCPA** → एक वर्ग के रूप में उपभोक्ता अधिकारों, अनुचित व्यापार प्रथाओं और भ्रामक विज्ञापनों के लिए नियामक/प्रवर्तन प्राधिकरण।
- **उपभोक्ता आयोग** → उपभोक्ता विवादों के न्यायनिर्णयन के लिए अर्ध-न्यायिक तंत्र।

इस प्रकार, चार में से तीन कथन सही हैं।

प्रश्न5. उत्तरी गॉशॉक (Northern Goshawk) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह एक वन-संबद्ध शिकारी पक्षी (रैटर) है जिसका शिकार पक्षी और छोटे स्तनधारी जीव हैं।
2. भारत में, इसे वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची I के तहत संरक्षित किया गया है, जबकि इसकी वैश्विक आईयूसीएन (IUCN) स्थिति 'कम से कम चिंताजनक' (Least Concern) है।
3. भारत में इसका पारिस्थितिक वितरण विशेष रूप से केवल मैंग्रोव और तटीय आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र तक सीमित है।

ऊपर दिए गए कथनों में से कितने सही हैं?

- (q) केवल एक
- (r) केवल दो
- (s) सभी तीन
- (t) कोई नहीं

उत्तर: (b)

विस्तृत व्याख्या: कथन1 और 2 सही हैं, जबकि कथन3 गलत है।

कथन1 सही है। उत्तरी गॉशॉक (*Accipiter gentilis*), मुख्य रूप से वन और वुडलैंड आवासों से जुड़ा एक शिकारी पक्षी है। इसके शिकार का आधार पक्षी और छोटे स्तनधारी हैं। इसे एक अवसरवादी शिकारी के रूप में भी वर्णित किया गया है और यह अत्यधिक क्षेत्र-रक्षी (Territorial) होता है।

कथन2 सही है। भारत में, उत्तरी गोंशॉक वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची I के तहत संरक्षित है। इसकी वैश्विक आईयूसीएन (IUCN) रेड लिस्ट श्रेणी 'कम से कम चिंताजनक' (Least Concern) है। यह प्रवासी प्रजातियों के संरक्षण पर अभिसमय (CMS) के परिशिष्ट II के तहत भी सूचीबद्ध है। यह एक महत्वपूर्ण UPSC जाल (भ्रम) पैदा करता है: एक प्रजाति की वैश्विक IUCN श्रेणी 'कम से कम चिंताजनक' हो सकती है, जबकि किसी विशेष देश के भीतर उसे उच्च स्तर का कानूनी संरक्षण प्राप्त हो सकता है।

कथन3 गलत है। उत्तरी गोंशॉक मैंग्रोव या तटीय आर्द्रभूमि पारिस्थितिक तंत्र तक सीमित नहीं है। यह मुख्य रूप से पर्णपाती और शंकुधारी वनों सहित वन और वुडलैंड आवासों से जुड़ा हुआ है। भारत में, इसका वितरण उपयुक्त वनाच्छादित परिदृश्यों में फैला हुआ है।

वैश्विक संरक्षण स्थिति, घरेलू कानूनी संरक्षण और आवास वरीयता के बीच का अंतर विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। इन तीनों अवधारणाओं को अदला-बदली योग्य नहीं माना जाना चाहिए। इसलिए, केवल कथन1 और 2 सही हैं।

प्रश्न6. निम्नलिखित भौगोलिक विवरण पर विचार कीजिए: यह भारत के पूर्वी तट पर एक तटीय संरक्षित क्षेत्र है, जो ब्राह्मणी और बैतरणी नदी प्रणालियों के डेल्टाई क्षेत्र में स्थित है। यह विशेष रूप से अपने व्यापक मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र के लिए प्रसिद्ध है और खारे पानी के मगरमच्छ के संरक्षण से जुड़ा है। यह गहिरमाथा तट के पास भी स्थित है, जो ओलिव रिडले कछुओं का एक महत्वपूर्ण सामूहिक घोंसला बनाने (Mass-nesting) का स्थान है।

ऊपर वर्णित संरक्षित क्षेत्र है:

- (u) सिमलीपाल राष्ट्रीय उद्यान
- (v) चिल्का वन्यजीव अभयारण्य
- (w) भीतरकणिका राष्ट्रीय उद्यान
- (x) सातकोसिया गॉर्ज वन्यजीव अभयारण्य

उत्तर: (c)

विस्तृत व्याख्या: सही उत्तर भीतरकणिका राष्ट्रीय उद्यान है।

भीतरकणिका ओडिशा के केंद्रपाड़ा जिले में स्थित है, जो मुख्य रूप से ब्राह्मणी और बैतरणी नदी प्रणालियों से जुड़े डेल्टाई वातावरण में है। यह भारत के महत्वपूर्ण मैंग्रोव पारिस्थितिक तंत्रों में से एक है।

यह क्षेत्र खारे पानी के मगरमच्छ संरक्षण के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। क्षेत्र में मगरमच्छ संरक्षण कार्यक्रम भीतरकणिका राष्ट्रीय उद्यान की घोषणा से पहले का है।

यह संरक्षित-क्षेत्र परिसर भौगोलिक रूप से गहिरमाथा से भी जुड़ा हुआ है, जो इसके पूर्व में स्थित है और ओलिव रिडले कछुओं के सामूहिक घोंसले (Arribada) के लिए प्रसिद्ध है। गहिरमाथा को 1997 में एक समुद्री वन्यजीव अभयारण्य घोषित किया गया था, जबकि भीतरकणिका वन्यजीव अभयारण्य के मुख्य क्षेत्र को 1998 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया था।

भीतरकणिका को 2002 में रामसर स्थल (Ramsar Site) के रूप में भी नामित किया गया था, जो पारिस्थितिकी तंत्र के अंतर्राष्ट्रीय आर्द्रभूमि महत्व को उजागर करता है।

अन्य विकल्प जानबूझकर तार्किक रूप से रखे गए हैं:

- **सिमलीपाल** → उत्तरी ओडिशा में प्रमुख वनाच्छादित संरक्षित क्षेत्र, विशेष रूप से पर्णपाती वनों और बाघ संरक्षण से जुड़ा है।

- **चिल्का** → ओडिशा का प्रमुख खारे पानी का झील/लैगून पारिस्थितिकी तंत्र।
- **सातकोसिया** → महानदी नदी गॉर्ज पारिस्थितिकी तंत्र से जुड़ा हुआ है।

इसलिए, ब्राह्मणी-बैतरणी डेल्टा + मैंग्रोव + खारे पानी का मगरमच्छ + गहिरमाथा से निकटता का संयोजन विशिष्ट रूप से भीतरकणिका राष्ट्रीय उद्यान की पहचान करता है।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. "मुगल कृषि प्रणाली को एक साधारण मकान मालिक-किरायेदार (Landlord-Tenant) संबंध के बजाय किसानों, जमींदारों और राज्य के बीच एक जटिल अंतःक्रिया द्वारा चित्रित किया गया था।" इन संबंधों की प्रकृति का परीक्षण कीजिए और व्याख्या कीजिए कि उन्होंने मुगल ग्रामीण अर्थव्यवस्था के कामकाज को कैसे आकार दिया।

नमूना उत्तर

कृषि अर्थव्यवस्था मुगल साम्राज्य की भौतिक नींव थी। कृषि ने वह मुख्य अधिशेष (Surplus) उत्पन्न किया जिस पर शाही प्रशासन, सैन्य प्रतिष्ठान और शहरी अर्थव्यवस्था निर्भर थी। हालांकि, मुगल ग्रामीण इलाके को एक केंद्रीय राज्य और निष्क्रिय कृषकों के बीच एक साधारण संबंध के माध्यम से व्यवस्थित नहीं किया गया था। इसके बजाय, इसमें किसानों, जमींदारों, स्थानीय मध्यस्थों और शाही राजस्व मशीनरी के बीच निरंतर अंतःक्रिया शामिल थी।

सक्रिय आर्थिक एजेंटों के रूप में किसान

किसान कोई एक समान या शक्तिहीन वर्ग नहीं थे। कृषकों में भूमि, पशुधन, उपकरण और श्रम तक पहुंच की अलग-अलग डिग्री वाले विभिन्न समूह शामिल थे।

किसान जीवन निर्वाह और व्यावसायिक (व्यापारिक) दोनों तरह की फसलों की खेती करते थे। कपास, गन्ना और नील जैसी फसलों का विस्तार यह दर्शाता है कि ग्रामीण उत्पादन गांव से परे बाजारों से जुड़ा हुआ था।

राज्य आमतौर पर राजस्व के रूप में कृषि अधिशेष का एक बड़ा हिस्सा निकालने की कोशिश करता था। हालांकि, अत्यधिक निष्कर्षण स्वयं खेती को कमजोर कर सकता था। नतीजतन, मुगल राजकोषीय प्रणाली को राज्य की मांग और उत्पादक के रूप में किसानों की क्षमता के बीच एक संतुलन की आवश्यकता थी।

जमींदारों की भूमिका

जमींदारों ने एक मध्यवर्ती लेकिन शक्तिशाली स्थिति पर कब्जा कर रखा था। वे केवल आधुनिक जमींदारों के बराबर नहीं थे। उनका अधिकार वंशानुगत अधिकारों, स्थानीय संसाधनों पर नियंत्रण, सामाजिक स्थिति, सैन्य क्षमता और राज्य द्वारा मान्यता से प्राप्त हो सकता था।

वे राजस्व एकत्र कर सकते थे, गांवों पर अपना प्रभाव बढ़ा सकते थे और सशस्त्र समर्थकों को जुटा सकते थे। कुछ जमींदारों ने बड़े क्षेत्रों पर नियंत्रण रखा, जबकि अन्य के पास अपेक्षाकृत मामूली स्थानीय प्रभाव था।

इसलिए राज्य के साथ उनका संबंध एक ही समय में सहयोगात्मक और प्रतिस्पर्धी दोनों था। मुगल प्रशासन प्रभावी राजस्व निष्कर्षण के लिए स्थानीय मध्यस्थों पर निर्भर था, लेकिन उसने अपनी स्वायत्त शक्ति को विनियमित और अधीनस्थ करने का भी प्रयास किया।

राज्य और कृषि अधिशेष

मुगल राज्य ने भू-राजस्व के आकलन और संग्रह के लिए परिष्कृत प्रणालियाँ विकसित कीं। अकबर के तहत, राजा टोडरमल से जुड़े सुधारों ने खेती योग्य भूमि, फसल की उपज और राजस्व दायित्वों के व्यवस्थित आकलन की मांग की।

इसलिए राज्य केवल बेतरतीब ढंग से राजस्व नहीं निकाल रहा था; इसने कृषि उत्पादन को राजकोषीय रूप से स्पष्ट और मापने योग्य बनाने का प्रयास किया।

हालांकि, यह संबंध गतिशील बना रहा। खेती में बदलाव, फसलों की कीमतें, स्थानीय विरोध और जलवायु परिस्थितियाँ राजस्व संग्रह को प्रभावित कर सकती थीं।

ग्राम समुदाय

गांव एक महत्वपूर्ण संस्थागत स्थान था जहां कृषक, कारीगर, मुखिया और अन्य समूह अंतःक्रिया करते थे। ग्रामीण समाज ने जाति, व्यवसाय, भूमि तक पहुंच और आर्थिक संसाधनों के आधार पर काफी भिन्नता (स्तरीकरण) भी प्रदर्शित की।

इस प्रकार, गांव को एक समतावादी आत्मनिर्भर इकाई के रूप में रोमांटिक रूप से नहीं देखा जाना चाहिए।

व्यापक आर्थिक महत्व

कृषि उत्पादन ने शहरीकरण और लंबी दूरी के व्यापार का समर्थन किया। कृषि अधिशेष ने शाही खर्चों को वित्तपोषित किया, जबकि व्यावसायिक फसलों ने गांवों को व्यापारियों और शहरी बाजारों से जोड़ा।

नतीजतन, मुगल ग्रामीण क्षेत्र एक ही समय में निम्नलिखित का स्थल था:

जीवन निर्वाह उत्पादन + राजस्व निष्कर्षण + व्यापारीकरण + सामाजिक पदानुक्रम।

निष्कर्ष

मुगल कृषि प्रणाली शाही राज्य और स्थानीय समाज के बीच एक बातचीत वाले और अक्सर विवादित संबंधों के माध्यम से काम करती थी। किसान अधिशेष उत्पन्न करते थे, जमींदार मध्यस्थता करते थे और स्थानीय शक्ति का प्रयोग करते थे, और राज्य एक तेजी से विस्तृत राजस्व प्रणाली के माध्यम से अधिशेष के एक हिस्से को हड़पने का प्रयास करता था। इन संबंधों को समझना मुगल राजकोषीय शक्ति की ताकत और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के भीतर अंतर्निहित निरंतर तनावों दोनों को समझने में मदद करता है।

प्रश्न 2. "स्वतंत्रता के बाद के शुरुआती दशकों में कांग्रेस प्रणाली के प्रभुत्व को राजनीतिक प्रतिस्पर्धा की अनुपस्थिति के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए।" कांग्रेस के प्रभुत्व के लिए जिम्मेदार कारकों पर चर्चा कीजिए और व्याख्या कीजिए कि भारत फिर भी एक प्रतिस्पर्धी लोकतंत्र क्यों बना रहा।

नमूना उत्तर

स्वतंत्र भारत के पहले तीन आम चुनाव—1951-52, 1957 और 1962 में—भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का दबदबा रहा। फिर भी इस अवधि को केवल "एक-दलीय शासन" के रूप में वर्णित करना भ्रामक होगा। कांग्रेस ने एक वास्तविक प्रतिस्पर्धी लोकतांत्रिक ढांचे के भीतर चुनावी प्रभुत्व का आनंद लिया।

कांग्रेस के प्रभुत्व के पीछे के कारक

पहला, कांग्रेस के पास स्वतंत्रता संग्राम से प्राप्त एक ऐतिहासिक वैधता थी।

इसने दशकों तक राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया था और इसलिए देश के बड़े हिस्सों में फैले संगठनात्मक नेटवर्क इसके पास थे। कई मतदाताओं ने पार्टी को राष्ट्रीय स्वतंत्रता और नए गणराज्य की स्थापना से जोड़ा।

दूसरा, इसका सामाजिक और वैचारिक दायरा असाधारण था।

कांग्रेस ने कई वैचारिक प्रवृत्तियों वाले एक व्यापक राजनीतिक गठबंधन के रूप में कार्य किया। इसने रूढ़िवादियों, समाजवादियों, उदारवादियों, ग्रामीण अभिजात्य वर्ग, अल्पसंख्यकों और विभिन्न क्षेत्रीय हितों को समायोजित किया।

इससे इसे एक ऐसी चुनावी पहुंच मिली जो संकीर्ण वैचारिक दलों में अक्सर गायब थी।

तीसरा, संगठनात्मक पैठ काफी मजबूत थी।

पार्टी के पास कई निर्वाचन क्षेत्रों में स्थानीय स्तर के नेटवर्क और राजनीतिक कार्यकर्ता थे। इसके विपरीत, कई विपक्षी दल क्षेत्रीय रूप से केंद्रित या संगठनात्मक रूप से कमजोर थे।

चौथा, विपक्षी दल विखंडित (बंटे हुए) थे।

कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट, भारतीय जनसंघ, स्वतंत्र पार्टी और विभिन्न क्षेत्रीय संरचनाएं अलग-अलग वैचारिक और सामाजिक निर्वाचन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती थीं। उनके विखंडन ने एक एकीकृत चुनावी चुनौती की संभावना को कम कर दिया।

यह एक-दलीय शासन क्यों नहीं था?

एक-दलीय प्रभुत्व और एक-दलीय राज्य के बीच का अंतर महत्वपूर्ण है।

भारत ने निम्नलिखित को बनाए रखा:

- आवधिक चुनाव;
- सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार;
- स्वतंत्र राजनीतिक दल;
- विपक्ष का प्रतिनिधित्व;
- राजनीतिक लामबंदी की स्वतंत्रता; और
- संवैधानिक संस्थाएं।

विपक्षी दल चुनाव लड़ सकते थे और कभी-कभी महत्वपूर्ण जीत हासिल कर सकते थे। 1957 में केरल में कम्युनिस्ट पार्टी की जीत विशेष रूप से महत्वपूर्ण थी क्योंकि इसने प्रदर्शित किया कि कांग्रेस के प्रभुत्व के दौरान भी चुनावी बदलाव संवैधानिक रूप से संभव था।

इसके अलावा, कांग्रेस स्वयं आंतरिक रूप से बहुलवादी थी। कई राजनीतिक संघर्ष केवल कांग्रेस और विपक्षी दलों के बीच होने के बजाय कांग्रेस संगठन के भीतर ही हुए।

लोकतांत्रिक महत्व

इसलिए शुरुआती कांग्रेस प्रणाली लोकतांत्रिक प्रतिस्पर्धा के एक अनूठे रूप का प्रतिनिधित्व करती थी जिसमें एक पार्टी अत्यधिक सफल रही लेकिन उसने चुनावी प्रतियोगिता को समाप्त नहीं किया।

यह अंतर महत्वपूर्ण है क्योंकि राजनीतिक प्रभुत्व चुनावी वैधता के माध्यम से उत्पन्न हो सकता है, जबकि सत्तावादी एक-दलीय शासन सार्थक राजनीतिक प्रतिस्पर्धा को समाप्त करने पर टिका होता है।

सीमाएं

फिर भी कांग्रेस के प्रभुत्व ने कुछ जोखिम पैदा किए। पार्टी के भारी संगठनात्मक और चुनावी लाभ विपक्षी दलों की संस्थागत क्षमता को कमजोर कर सकते थे। कुछ राज्यों में राजनीतिक प्रतिस्पर्धा असमान रही।

इसके अलावा, कांग्रेस के भीतर गुटबाज़ी के संतुलन पर निर्भरता राजनीतिक जवाबदेही को कम प्रत्यक्ष बना सकती थी।

निष्कर्ष

भारतीय लोकतंत्र का पहला चरण दर्शाता है कि चुनावी प्रतिस्पर्धा और चुनावी प्रभुत्व सह-अस्तित्व में रह सकते हैं। कांग्रेस के प्रभुत्व को स्वतंत्रता आंदोलन में उसकी भूमिका, व्यापक सामाजिक गठबंधन, संगठनात्मक पहुँच और विखंडित विपक्ष द्वारा सुगम बनाया गया था। फिर भी चुनावों, विपक्षी दलों और संवैधानिक प्रक्रियाओं के अस्तित्व का अर्थ था कि भारत एक प्रतिस्पर्धी लोकतंत्र बना रहा। यह अनुभव लोकतंत्र के भीतर बार-बार जीतने और स्वयं लोकतंत्र को समाप्त करने के बीच के अंतर को दर्शाता है।

प्रश्न 3. "वैश्विक वित्तीय और व्यापार बाजारों में एकीकृत अर्थव्यवस्था दक्षता और पूंजी आवंटन के अवसर प्राप्त करती है, लेकिन साथ ही बाहरी झटकों के प्रति संवेदनशील हो जाती है।"

एक खुली अर्थव्यवस्था के संदर्भ में इस दोहरेपन की व्याख्या कीजिए। कौन-से नीतिगत उपकरण ऐसे जोखिमों/संवेदनशीलता को प्रबंधित करने में मदद कर सकते हैं?

नमूना उत्तर

एक खुली अर्थव्यवस्था वह है जो वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार, पूंजी प्रवाह और विदेशी मुद्रा लेनदेन के माध्यम से शेष विश्व के साथ बड़े पैमाने पर बातचीत करती है। वैश्विक आर्थिक एकीकरण से दक्षता और पूंजी, प्रौद्योगिकी तथा बाजारों तक पहुंच बढ़ सकती है, लेकिन यह बाहरी गड़बड़ियों को घरेलू अर्थव्यवस्था में तेजी से प्रसारित भी कर सकता है।

खुलेपन के लाभ

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार देशों को तुलनात्मक लाभ के अनुसार विशेषज्ञता हासिल करने में सक्षम बनाता है। बड़े बाजारों तक पहुंच पैमाने की अर्थव्यवस्थाएं (economies of scale) उत्पन्न कर सकती हैं और उत्पादकता में सुधार को प्रोत्साहित कर सकती हैं।

पूंजी की गतिशीलता विकासशील अर्थव्यवस्थाओं को निवेश के लिए अतिरिक्त संसाधन प्रदान कर सकती है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) प्रौद्योगिकी, प्रबंधकीय प्रथाओं और वैश्विक उत्पादन नेटवर्क में एकीकरण भी ला सकता है।

इसी तरह, आयातित मध्यवर्ती वस्तुएं घरेलू उद्योगों की उत्पादकता और प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार कर सकती हैं।

संवेदनशीलता/जोखिम के स्रोत

वही चैनल जो लाभ पहुंचाते हैं, झटके भी पहुंचा सकते हैं।

1. विनिमय-दर के झटके:

घरेलू मुद्रा के मूल्यहास से आयातित वस्तुओं, विशेषकर ऊर्जा और मध्यवर्ती वस्तुओं की घरेलू लागत बढ़ सकती है। यदि अर्थव्यवस्था आयात पर अत्यधिक निर्भर है, तो यह मुद्रास्फीति के दबाव में योगदान कर सकती है।

2. पूंजी-प्रवाह का उलटना:

बड़े पैमाने पर पूंजी प्रवाह निवेश को वित्तपोषित कर सकता है और वित्तीय बाजारों को मजबूत कर सकता है। हालांकि, अचानक उल्टे प्रवाह से विनिमय-दर पर दबाव, संपत्ति की कीमतों में अस्थिरता और तरलता का तनाव उत्पन्न हो सकता है।

3. बाहरी मांग के झटके:

प्रमुख व्यापारिक साझेदारों में आर्थिक मंदी से निर्यात घट सकता है और अंतर्राष्ट्रीय मांग पर निर्भर क्षेत्र प्रतिकूल रूप से प्रभावित हो सकते हैं।

4. कमोडिटी (वस्तु)-कीमतों के झटके:

जब कच्चे तेल या अन्य आवश्यक वस्तुओं की वैश्विक कीमतें बढ़ती हैं तो आयात-निर्भर अर्थव्यवस्थाएं अपने व्यापार संतुलन में काफी गिरावट का अनुभव कर सकती हैं।

समष्टि आर्थिक (Macroeconomic) नीतिगत प्रतिक्रियाएं

केंद्रीय बैंक अत्यधिक अस्थिरता को प्रबंधित करने के लिए विदेशी मुद्रा बाजारों में हस्तक्षेप कर सकता है, हालांकि निरंतर हस्तक्षेप अंतर्निहित आर्थिक बुनियादी सिद्धांतों को स्थायी रूप से दरकिनार नहीं कर सकता है।

मौद्रिक नीति मुद्रास्फीति के दबावों को संबोधित कर सकती है, लेकिन बाहरी झटके के दौरान मौद्रिक स्थितियों को सख्त करने से घरेलू मांग भी कमजोर हो सकती है।

राजकोषीय नीति अस्थायी मंदी के दौरान संवेदनशील क्षेत्रों का समर्थन कर सकती है, बशर्ते राजकोषीय स्थिरता बनी रहे।

विदेशी मुद्रा भंडार अव्यवस्थित बाहरी समायोजन के खिलाफ एक बफर (सुरक्षा कवच) प्रदान कर सकता है।

संरचनात्मक उपाय

सबसे टिकाऊ प्रतिक्रिया वैश्विक बाजारों से स्थायी सुरक्षा नहीं बल्कि अधिक घरेलू लचीलापन है।

इसके लिए निम्नलिखित की आवश्यकता है:

- निर्यात बाजारों का विविधीकरण;
- घरेलू आपूर्ति श्रृंखलाओं का विकास;
- रणनीतिक क्षेत्रों में अत्यधिक आयात निर्भरता में कमी;
- विवेकपूर्ण बाहरी उधारी;

- पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार;
- गहरे घरेलू वित्तीय बाजार; और
- मैक्रोप्रूडेंशियल (समष्टि-विवेकपूर्ण) विनियमन।

नीतिगत दुविधा

खुली-अर्थव्यवस्था प्रबंधन में कई उद्देश्यों को संतुलित करना शामिल है। अत्यधिक पूंजी नियंत्रण वित्तीय एकीकरण को कम कर सकते हैं, जबकि पूरी तरह से अप्रतिबंधित पूंजी प्रवाह अस्थिरता को बढ़ा सकता है। इसी तरह, एक कृत्रिम रूप से तय विनिमय दर अल्पकालिक स्थिरता प्रदान कर सकती है लेकिन अगर आर्थिक बुनियादी सिद्धांत अलग हो जाते हैं तो इसे बनाए रखना मुश्किल हो जाता है।

चुनौती इसलिए उत्पादक खुलेपन और अनियंत्रित संवेदनशीलता के बीच अंतर करने की है।

निष्कर्ष

वैश्विक एकीकरण को स्वाभाविक रूप से फायदेमंद या स्वाभाविक रूप से अस्थिर करने वाला नहीं समझा जाना चाहिए। यह ऐसे चैनल बनाता है जिनके माध्यम से उत्पादकता लाभ, पूंजी और प्रौद्योगिकी एक अर्थव्यवस्था में प्रवेश कर सकते हैं, लेकिन वही चैनल वित्तीय, कमोडिटी और मांग के झटकों को भी प्रसारित कर सकते हैं। इसलिए प्रभावी समष्टि आर्थिक प्रबंधन के लिए लचीले समायोजन, पर्याप्त बफर, विवेकपूर्ण विनियमन और संरचनात्मक विविधीकरण के संयोजन की आवश्यकता होती है। उद्देश्य अलगाव के बजाय लचीला/सक्षम एकीकरण होना चाहिए।

प्रश्न 4. "नैतिक शासन के लिए नियमों के अनुपालन से कहीं अधिक की आवश्यकता होती है; इसके लिए लोक सेवकों को संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप अपने विवेक (Discretion) का प्रयोग करने की आवश्यकता होती है।" उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए। संस्थागत तंत्र विवेक को मनमानेपन (Arbitrariness) में बदलने से कैसे रोक सकते हैं?

नमूना उत्तर

लोक प्रशासन नियमों, प्रक्रियाओं और प्रत्यायोजित अधिकारों के माध्यम से संचालित होता है। फिर भी कोई भी कानूनी ढांचा हर संभावित प्रशासनिक स्थिति का अनुमान नहीं लगा सकता है। नतीजतन, सिविल सेवक अनिवार्य रूप से अपने विवेक (स्वविवेक) का प्रयोग करते हैं। नैतिक चुनौती तब उत्पन्न होती है जब स्वविवेक सार्वजनिक उद्देश्य से अलग हो जाता है और मनमानेपन, पक्षपात या अधिकार के दुरुपयोग में बदल जाता है।

नियम प्रशासनिक आचरण के लिए न्यूनतम ढांचा प्रदान करते हैं, लेकिन नैतिक शासन की मांग है कि उनके कार्यान्वयन में न्याय, समानता, गरिमा, निष्पक्षता और जवाबदेही जैसे संवैधानिक मूल्यों को भी प्रतिबिंबित किया जाए।

स्वविवेक क्यों आवश्यक है

प्राकृतिक आपदा का जवाब देने वाले जिला प्रशासन पर विचार करें। खरीद नियम आमतौर पर निर्धारित प्रक्रियाओं, प्रतिस्पर्धा और दस्तावेजीकरण की मांग करते हैं। हालांकि, जीवन के लिए तत्काल खतरा आपातकालीन खरीद को आवश्यक बना सकता है।

इसी तरह, कल्याणकारी कानून पात्रता मानदंड स्थापित कर सकते हैं, लेकिन संवेदनशील नागरिक ऐसी असाधारण परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं जो मानक प्रशासनिक फॉर्मों में अनुमानित नहीं हैं।

इसलिए, स्वविवेक को पूरी तरह से समाप्त करना न तो यथार्थवादी है और न ही आवश्यक रूप से वांछनीय।

स्वविवेक कब समस्याग्रस्त हो जाता है

स्वविवेक तब मनमाना हो जाता है जब:

- प्रासंगिक औचित्य के बिना समान मामलों के साथ अलग-अलग व्यवहार किया जाता है;
- निर्णय व्यक्तिगत संबंधों से प्रभावित होते हैं;
- राजनीतिक या निजी दबाव जनहित पर हावी हो जाता है;
- कारणों को जानबूझकर छिपाया जाता है;
- प्रक्रियाओं को चुनिंदा रूप से शिथिल किया जाता है; या
- बाहरी विचारों के लिए लाभ वितरित किए जाते हैं।

उदाहरण के लिए, दूसरे के पक्ष में वस्तुनिष्ठ साक्ष्यों के बावजूद किसी पसंदीदा फर्म को सार्वजनिक अनुबंध देना वैध प्रशासनिक स्वविवेक को संरक्षण/पक्षपात में बदल देगा।

मार्गदर्शक के रूप में संवैधानिक नैतिकता

संवैधानिक मूल्य एक नैतिक कम्पास प्रदान करते हैं।

समानता की आवश्यकता है कि समान रूप से स्थित व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार किया जाए जब तक कि कोई प्रासंगिक अंतर मौजूद न हो।

न्याय के लिए केवल प्रक्रियात्मक शुद्धता के बजाय वास्तविक परिणामों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

गरिमा के लिए नागरिकों के साथ मानवीय व्यवहार आवश्यक है।

धर्मनिरपेक्षता और निष्पक्षता के लिए अधिकारियों को अप्रासंगिक व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर भेदभाव से बचने की आवश्यकता होती है।

संस्थागत सुरक्षा उपाय

मनमाने स्वविवेक के खिलाफ व्यक्तिगत नैतिकता ही एकमात्र बचाव नहीं हो सकती। संस्थाओं को निर्णय लेने की प्रक्रिया को सीमित और निर्देशित करना चाहिए।

1. कारण वाले निर्णय (Reasoned decisions):

अधिकारियों को महत्वपूर्ण विवेकाधीन निर्णयों के कारणों को रिकॉर्ड करना चाहिए। इससे निर्णय समीक्षा योग्य बन जाते हैं।

2. पारदर्शिता:

प्रकटीकरण तंत्र और सक्रिय पारदर्शिता मनमानी कार्रवाई के अवसरों को कम करती है।

3. अंकेक्षण (Audit):

वित्तीय और प्रदर्शन ऑडिट स्थापित प्रक्रियाओं से विचलन की पहचान कर सकते हैं।

4. न्यायिक समीक्षा:

अदालतें यह जांच कर सकती हैं कि क्या कार्यकारी स्वविवेक का प्रयोग मनमाने ढंग से, तर्कहीन रूप से या कानून के विपरीत किया गया है।

5. शिकायत निवारण:

नागरिकों को प्रशासनिक निर्णयों को चुनौती देने के लिए सुलभ तंत्र की आवश्यकता होती है।

6. हितों के टकराव से सुरक्षा उपाय:

अधिकारियों को इसका खुलासा करना चाहिए और खुद को अलग कर लेना चाहिए जहाँ व्यक्तिगत हित आधिकारिक निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं।

7. वस्तुनिष्ठ मानदंड:

जहाँ स्वविवेक अपरिहार्य है, सरकारों को पारदर्शी मानदंड और मानक संचालन प्रक्रियाएं (SOPs) स्थापित करनी चाहिए।

नैतिक नेतृत्व

संस्थागत सुरक्षा उपाय आवश्यक हैं लेकिन पर्याप्त नहीं हैं। प्रशासनिक संस्कृति भी मायने रखती है। वरिष्ठ अधिकारियों को यह प्रदर्शित करना होगा कि अल्पकालिक राजनीतिक या व्यक्तिगत सुविधा की तुलना में ईमानदारी, निष्पक्षता और जनसेवा को अधिक मूल्य दिया जाता है।

निष्कर्ष

विशेष रूप से जटिल और तेजी से बदलती परिस्थितियों में स्वविवेक शासन की एक अपरिहार्य विशेषता है। इसलिए नैतिक उद्देश्य स्वविवेक को समाप्त करना नहीं है बल्कि कानून, तर्क, पारदर्शिता, संस्थागत समीक्षा और संवैधानिक मूल्यों के माध्यम से इसे अनुशासित करना है। जब स्वविवेक व्याख्या योग्य, समीक्षा योग्य और वैध जनहित की ओर उन्मुख रहता है, तो यह मनमानी शक्ति के बजाय उत्तरदायी शासन का एक साधन बन जाता है।

सामयिक विषय – आंतरिक सुरक्षा

प्रश्न 5. "झीरम घाटी नरसंहार यह दर्शाता है कि उग्रवाद-विरोधी (Counter-insurgency) कार्रवाई को केवल सुरक्षा बलों और सशस्त्र चरमपंथियों के बीच संघर्ष तक सीमित नहीं किया जा सकता है; यह समान रूप से खुफिया समन्वय, राज्य की क्षमता, राजनीतिक सुरक्षा, आदिवासी अधिकारों और विकास की वैधता की परीक्षा है।"

झीरम घाटी हमले और बाद के घटनाक्रमों के आलोक में, वामपंथी उग्रवाद के खिलाफ भारत की रणनीति के लिए सबक का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

नमूना उत्तर

25 मई 2013 का झीरम घाटी नरसंहार बस्तर, छत्तीसगढ़ में एक बड़ा माओवादी हमला था, जिसमें एक राजनीतिक कार्यक्रम से लौट रहे कांग्रेस नेताओं के काफिले पर घात लगाकर हमला किया गया था। इस हमले में प्रमुख राजनीतिक नेताओं सहित कम से कम 27 लोग मारे गए और 38 घायल हो गए। सितंबर 2026 में, जगदलपुर में एक विशेष एनआईए (NIA) अदालत ने दस आरोपियों को दोषी ठहराया और इसके बाद उन्हें मौत की सजा सुनाई; यह सजा अपीलीय प्रक्रिया के अधीन है।

यह घटना केवल अपने पैमाने के कारण ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि इसलिए भी है क्योंकि इसने यह प्रदर्शित किया कि कैसे विद्रोही हिंसा इलाके, खुफिया कमजोरियों, राजनीतिक आंदोलनों और राज्य की उपस्थिति में अंतराल का फायदा उठा सकती है।

1. खुफिया और परिचालन समन्वय:

पहला सबक खुफिया जानकारी से संबंधित है।

उग्रवाद-विरोधी कार्रवाई के लिए निम्नलिखित के एकीकरण की आवश्यकता होती है:

- मानव खुफिया जानकारी (Human intelligence);
- तकनीकी खुफिया जानकारी (Technical intelligence);
- स्थानीय पुलिस ज्ञान;
- केंद्रीय खुफिया एजेंसियां;
- निगरानी (Surveillance);
- संचार नेटवर्क; और
- वास्तविक समय जोखिम मूल्यांकन।

एक संघर्ष प्रभावित वन क्षेत्र से गुजरने वाले एक बड़े राजनीतिक काफिले के लिए सुरक्षा योजना की आवश्यकता होती है जो मौजूदा खतरे के माहौल के साथ राजनीतिक कार्यक्रम को एकीकृत करे।

इसलिए झीरम घटना केवल खुफिया जानकारी एकत्र करने के बजाय कार्रवाई योग्य खुफिया जानकारी (Actionable intelligence) के महत्व पर प्रकाश डालती है।

2. सुरक्षा और विकास आपस में जुड़े हुए हैं:

माओवादी चुनौती ने ऐतिहासिक रूप से उन क्षेत्रों में ताकत हासिल की जिनकी विशेषता कठिन क्षेत्र, कमजोर कनेक्टिविटी, सीमित प्रशासनिक उपस्थिति और सामाजिक-आर्थिक शिकायतें थीं।

हालांकि, विकास की अवधारणा केवल उग्रवाद-विरोधी उपकरण के रूप में नहीं बनाई जानी चाहिए। सड़कों, दूरसंचार, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और कल्याणकारी सेवाओं का अपना आंतरिक विकासात्मक मूल्य है।

इसलिए उपयुक्त मॉडल है:

सुरक्षा → क्षेत्रीय पहुंच → शासन → विकास → संस्थागत वैधता।

"क्लियर, होल्ड एंड डेवलप" (Clear, Hold and Develop) दृष्टिकोण इस अंतरनिर्भरता को दर्शाता है।

3. आदिवासी अधिकार और राज्य की वैधता:

एक पूरी तरह से सैन्यीकृत दृष्टिकोण अलगाव पैदा कर सकता है यदि स्थानीय समुदाय राज्य के संस्थानों का अनुभव मुख्य रूप से दमनकारी तंत्र के माध्यम से करते हैं।

सलवा जुद्ध का इतिहास नागरिक लामबंदी के माध्यम से दमनकारी कार्यों को आउटसोर्सिंग या अनौपचारिक रूप से विस्तार करने के नैतिक और संस्थागत खतरों को प्रदर्शित करता है। विशेष पुलिस अधिकारियों के रूप में आदिवासी युवाओं को हथियार देने से संबंधित सर्वोच्च न्यायालय का 2011 का हस्तक्षेप एक महत्वपूर्ण संवैधानिक सबक है।

इसलिए वामपंथी उग्रवाद-विरोधी नीति को निम्नलिखित की रक्षा करनी चाहिए:

- संवैधानिक अधिकार;
- कानून की उचित प्रक्रिया;
- आदिवासी भूमि और वन अधिकार;
- नागरिकों की गरिमा; और
- सुरक्षाकर्मियों की जवाबदेही।

4. आंतरिक सुरक्षा के हिस्से के रूप में राजनीतिक सुरक्षा:

झीरम घाटी ने यह भी प्रदर्शित किया कि विद्रोही संगठन केवल सुरक्षा प्रतिष्ठानों के बजाय लोकतांत्रिक राजनीतिक नेतृत्व को निशाना बना सकते हैं।

तदनुसार यह हमला एक व्यापक प्रश्न उठाता है: लोकतांत्रिक संस्थाओं की सुरक्षा स्वयं एक आंतरिक-सुरक्षा उद्देश्य है।

संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों में यात्रा करने वाले राजनीतिक नेताओं को लोकतांत्रिक राजनीतिक गतिविधियों को कमजोर किए बिना खतरे के आकलन के आधार पर सुरक्षा प्रोटोकॉल की आवश्यकता होती है।

5. न्याय और संस्थागत विश्वसनीयता:

ल लंबी न्यायिक प्रक्रिया जटिल उग्रवाद से जुड़े अपराधों को चलाने की कठिनाई को भी उजागर करती है। विशेष एनआईए अदालत का सितंबर 2026 का फैसला वर्षों की जांच और सुनवाई के बाद आया। दस जीवित आरोपियों को दोषी ठहराया गया, और उसके बाद मौत की सजा अपील की चरण में प्रवेश कर चुकी है।

साथ ही, कुछ पीड़ितों के परिवारों ने साजिश के कथित व्यापक आयामों की जांच की मांग जारी रखी है। इस तरह के दावे विवादित बने हुए हैं और इन्हें केवल इसलिए स्थापित तथ्य नहीं माना जाना चाहिए क्योंकि इन्हें सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत किया गया है।

यह अंतर एक महत्वपूर्ण सिद्धांत को दर्शाता है: न्याय के लिए साबित हुए अपराधों के लिए जवाबदेही और कानूनी प्रक्रियाओं के माध्यम से विश्वसनीय अनसुलझे प्रश्नों की जांच करने में सक्षम संस्थागत तंत्र दोनों की आवश्यकता होती है।

6. आगे का रास्ता:

भारत की वामपंथी उग्रवाद-विरोधी रणनीति में निम्नलिखित पर जोर दिया जाना चाहिए:

- खुफिया संलयन (Intelligence fusion);
- सुरक्षित संचार;
- विशेष जंगल युद्ध क्षमताएं;
- बेहतर सड़क और दूरसंचार कनेक्टिविटी;
- स्थायी प्रशासनिक उपस्थिति;
- आदिवासी भागीदारी;
- वन और भूमि अधिकारों का कार्यान्वयन;

- कानूनी रूप से उपयुक्त पुनर्वसन और पुनरेकीकरण;
- विद्रोही नेटवर्क का वित्तीय व्यवधान;
- नागरिकों की सुरक्षा; और
- सुरक्षा विफलताओं की त्वरित और विश्वसनीय जांच।

निष्कर्ष

झीरम घाटी का मुख्य सबक यह है कि उग्रवाद वहां पनपता है जहां सुरक्षा घाटे, शासन घाटे और सूचना घाटे आपस में मिलते हैं। इसके विपरीत, टिकाऊ उग्रवाद-विरोधी कार्रवाई के लिए सशस्त्र काडरों को खत्म करने से ज्यादा की जरूरत होती है। इसके लिए संवैधानिक राज्य को भौतिक रूप से उपस्थित, प्रशासनिक रूप से सक्षम, विकासात्मक रूप से उत्तरदायी और कानूनी रूप से जवाबदेह बनाने की आवश्यकता है। इस प्रकार, दीर्घकालिक उद्देश्य केवल "एक उग्रवाद को हराना" नहीं होना चाहिए, बल्कि विद्रोही शासन को अनावश्यक बनाना और संवैधानिक शासन को विश्वसनीय बनाना होना चाहिए।

